Educational Trend (A Journal of RIE, NCERT, Ajmer), Volume 2, Issue 1, January 2021
ISSN: 2583-6269

अजमेर जिले के प्रारम्भिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन 2017–18 परिणामों के आधार पर अधिगम क्षेत्रों की स्थिति का अध्ययन।

चेतना उपाध्याय
वरि. व्या. डाइट मसूदा अजमेर

सारांश – *वर्तमान में शिक्षा विभाग राजस्थान ने प्रारम्भिक शिक्षा को गुणवत्ता पूर्ण बनाने के उद्देश्य से प्राथमिक शिक्षा में नवीन मूल्यांकन प्रणाली लागू की है, जो कि बालक के विभिन्न अधिगम, क्षेत्रों का पृथक्–पृथक् विषयों के माध्यम से मूल्यांकन करेगी। हमें इस शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयत्न करना है कि वे अपेक्षित अधिगम क्षेत्र कौनसे हैं जहां प्राथमिक कक्षाओं में अधिकतम उपलब्धि प्राप्त हो रही है और उन अपेक्षित अधिगम क्षेत्रों को चिन्हित करना जहां कि अभी और ध्यान दिया जाना अति आवश्यक है जिससे कि प्रारम्भिक शिक्षा को और गुणवत्ता पूर्ण बनाया जा पाने में सहजता हासिल हो। मूल्यांकन प्रणाली और अधिक कारगर साबित हो।*

उद्देश्य–

प्रस्तुत विषय पर शोध अध्ययन से हमें यह पता लग पाएगा कि वे कौनसे अधिगम क्षेत्र हैं जहाँ बालक अपेक्षित मुकाम हासिल कर पाने में समस्याऐं प्रदर्शित कर रहे हैं। इससे हम अपनी कक्षा कक्षीय अध्ययन व अधिगम प्रणाली में और अपेक्षित सुधार कर पाने में कामयाबी हासिल कर पाऐंगे। हमें प्रारम्भिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन के परिणामों के आधार पर यह जानना है कि अधिगम क्षेत्रों की पृथक्–पृथक् विषयों को गुणवत्तापूर्ण बनाने हेतु अब आगे और किस दिशा में कार्य करना चाहिए। हमारे पाठ्यक्रम का सकारात्मक पहलु क्या है व इसमें कहाँ न्यूनता के दर्शन हो रहे हैं।

कुल मिलाकर इस क्रियात्मक अनुसंधान का यही उद्देश्य है कि मूल्यांकन प्रणाली के आधार पर बालकों के अधिगम क्षेत्रों की स्थिति का पता लगाना और विद्यालय के वास्तविक वातावरण में उसका सदुपयोग करने हेतु शिक्षण प्रक्रियाओं में परिवर्तन किए जाने का प्रस्ताव रखना।

महत्व –

उक्त अनुसंधान से प्राप्त परिणामों के आधार पर विद्यालय की शिक्षण प्रक्रियाओं का वास्तविक परिस्थितियों में अध्ययन करके उसकी स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल बनाया जा सकेगा। परिणाम स्वरूप शिक्षा में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों ही रूपों में सफलता की सम्भावना का प्रतिशत बढ़ पाएगा।

उक्त शोध के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्र में छात्रों की उपलब्धि को विकसित करने हेतु प्रयास सहजता से किए जा सकेंगे।

शोध से प्राप्त परिणामों के आधार पर विद्यालयों में चलने वाली परम्परागत शिक्षण शैली में विकासात्मक एवं प्रगतिवाद परिवर्तन करना आसान हो पाएगा।

एन.सी.एफ. 2005 एवं मूल्यांकन प्रक्रिया में आए नवीनतम बदलाव को ध्यान में रखते हुए, संशोधित ब्लूम्स टेक्सॉनामि 2001 (एण्डरसन एवं क्रोथ्वोल) के आधार पर प्रत्येक विषय (हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, पर्यावरण) से सम्बन्धित निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों एवं अधिगम सूचकों को ध्यान में रखते हुए जो प्रश्न पत्र निर्माण व मूल्यांकन प्रणाली विकसित की गई है उसकी अहमियत व्यवहारिक धरातल पर पता चल पाएगी व इसके सदुपयोग से विद्यार्थियों की शैक्षणिक गुणवत्ता बढ़ाने हेतु संभव प्रयास किये जाने में सहुलियत प्राप्त होगी।

समस्यासमस्या का क्षेत्र व सीमांकन–

राजस्थान में जिला अजमेर (10 ब्लॉक) कक्षा पांच 2017–18 में सम्मिलित परीक्षार्थी

समस्या का विश्लेषण–

भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक बालक को शिक्षा का अधिकार प्राप्त है। 0–14 वर्ष की उम्र विशेष तक निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार प्राप्त है। इसके तहत भारतीय शिक्षण प्रणाली में कुछ विशिष्ट परिवर्तन किए गए हैं।

राजस्थान में गत दो वर्ष 16–17 व 17–18 में पाठ्यक्रम व विद्यार्थियों की मूल्यांकन प्रणाली में भी विशिष्ट परिवर्तन लागू किए गए हैं। इसमें विद्यार्थियों का मूल्यांकन पूर्णतः मनोवैज्ञानिक तरीकों से किया जाना प्रस्तावित है। अर्थात् सीखने के प्रतिफल आधारित अधिगम क्षेत्रों की पृथक्–पृथक् क्षमताओं का आंकलन/प्रथम वर्ष 16–17 को नवीन अनुभव मान कर छोड़ दें तो 17–18 द्वितीय वर्ष होने से परिणामों की परख की जाना वर्तमन समय की अपेक्षा है ताकि नवीन परीक्षा प्रणाली/मूल्यांकन प्रणाली के सकारात्मक बिन्दुओं की समीक्षा की जा सके और प्राप्त परिणामों के आधार पर शिक्षण प्रक्रियाओं पर ध्यान दिया जा सके जो कि बालकों के शैक्षणिक उन्नयन में सहायक हो पाए।

अध्ययन प्रक्रिया–

अभिलेख अध्ययन→वर्गीकरण→विश्लेषण→सांख्यिकी→औसत→मध्यमान

विद्यार्थियों की उपस्थिति व प्राप्तांकों के प्रतिशत के आधार पर अध्ययन

सीमांकन

अजमेर जिले के विद्यार्थी जो प्रारम्भिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन 2017–2018 में शामिल हुए। राजकीय विद्यालय जो राजस्थान राज्य शिक्षा से पंजीकृत है।

प्राक्कल्पना

1. वैश्वीकरण के इस काल खण्ड के अन्तर्गत नवीन पीढ़ी के बारे में पूर्वानुमान लगाना बड़ा मुश्किल है।
2. शिक्षण प्रक्रिया व मूल्यांकन प्रणाली जब मनोवैज्ञानिक सिद्धातों के आधार पर है। अतः विद्यार्थियों के अधिगम में शत प्रतिशत सफलता की सम्भावना है।
3. सृजनात्मक अभिव्यक्ति व परिवेशीय सजगता में उच्चांक प्राप्ति की संभावना है।
4. शब्द विन्यास व लेखन शैली में उच्चांक प्राप्ति की संभावना है।
5. आकृति व स्थान की समझ, संख्या ज्ञान की समझ में उच्चांक प्राप्त होंगे।

6. सकारात्मक एवं मनोवैज्ञानिक शिक्षण प्रक्रियाओं से बालकों में न्याय व समता के प्रति सरोकार तथा एक दूसरे के कार्यों का सम्मान व गुणों की प्रशंसा करने में उन्हें उच्चांक प्राप्त होंगे।

प्राप्ति स्त्रोत

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मसूदा, अजमेर प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन 2018

परिणाम

प्रत्येक विषय की (पृथक्–पृथक्) अधिगम क्षेत्र व ग्रेडिंग (राजकीय विद्यालय)

विषय हिन्दी
प्राप्तांक प्रतिशत

क्र.सं.	अधिगम क्षेत्र	A+		A		B		C		D	
		राज.		राज.		राज.		राज.		राज.	
1	समझना व लिखना (गद्य)	12.95		38.34		36.26		9.89		2.56	
2	पढना, पढ़कर समझना व लिखना (नद्य)	11.60		38.12		29.78		18.18		2.32	
3	व्यावहारिक व्याकरण	31.53		38.60		18.81		8.38		2.68	
4	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	14.45		37.99		20.31		17.89		9.36	
5	परिवेशीय सजगता	12.45		11.89		28.69		27.13		19.83	
	योग	82.98		164.94		133.85		81.48		36.75	
	औसत प्राप्तांक	16.59		133.85		26.77		16.296		7.35	

विश्लेषण (समझना व लिखना गद्य)

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह सुनिश्चित होता है कि सर्वाधिक विद्यार्थियों ने A ग्रेड प्राप्त की द्वितीय स्थान पर B ग्रेड प्राप्त हुई। अतः यहां यह कहा जा सकता है कि कक्षा 5 के विद्यार्थियों में गद्य को समझना व लिखना सम्बन्धी योग्यता प्राप्त हो गई है।

पढ़ना, पढ़कर समझना व लिखना–पद्य

यहां भी प्राप्त आंकड़ों से यही सुनिश्चितता प्राप्त होती है कि सर्वाधिक विद्यार्थियों ने A ग्रेड व द्वितीय स्थान पर B ग्रेड प्राप्त की है। जो कि यह जानकारी देती है कि अधिकतम छात्रों में पढ़ने, समझने व लिखने की क्षमता प्राप्त हो गई है। गद्य व पद्य में लगभग समान योग्यता दृष्टिगोचर हो रही है।

व्यावहारिक व्याकरण

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि सर्वाधिक विद्यार्थियों ने A ग्रेड व द्वितीय स्थान पर A+ग्रेड प्राप्त की है। चूंकि किसी भी भाषा का मूल उसकी व्याकरण ही है। अतः इन आंकड़ों से हमें यह संतुष्टि प्राप्त होती है कि बालकों में व्याकरण सम्बन्धी जानकारी भली–भांति प्राप्त हुई है। व्याकरण की सही जानकारी होने से भाषा (हिन्दी) का भविष्य सुदृढ़ता प्राप्त करता दृष्टिगोचर हो रहा है।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

यहां भी प्राप्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि सर्वाधिक A ग्रेड और द्वितीय स्थान पर B ग्रेड प्राप्त की है। चौकाने वाला यह तथ्य है कि भाषा की उपरोक्त तीन दक्षताओं के पश्चात् सृजनात्मकता में D ग्रेड के प्राप्तांकों का प्रतिशत तुलनात्मक रूप में बढ़ा है। जबकि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर यह माना जाता है कि इस वय (05 से 10–12 वर्ष की उम्र में) में सृजनशीलता अधिक पाई जाती है।

क्योंकि इस उम्र में सृजन के प्रति कोई पूर्वाग्रह दुराग्रह कोई भय नहीं होता। ना ही भविष्य की कोई चिंता होती है। अतः बालकों में सहज सृजनशीलता के दर्शन स्वाभाविक तौर पर होते ही हैं। जो कि प्राप्त आंकड़ों द्वारा प्राप्त नहीं हुए हैं। अर्थात् सामान्य जानकारी पढ़ना, लिखनासमझना, व्याकरण का ज्ञान होते हुए भी विद्यार्थियों में मौलिकता या सृजनशीलता में पिछड़ना उचित प्रतीत नहीं हो रहा। अतः इस क्षेत्र में पुनर्विचार जरूरी है कि सृजनशीलता में जहां उच्चांक प्राप्ति की संभावना रहती है वहां तुलनात्मक रूप में डी ग्रेड के प्राप्तांकों का आंकड़ा बढ़ा कैसे? प्रथम अधिगम क्षेत्र में 2.56 दूसरे में 2.32 तीसरे क्षेत्र में 2.68 व चौथे क्षेत्र सृजनात्मकता में 9.36 (सर्वाधिक)

परिवेशीय सजगता

इस क्षेत्र में प्राप्तांकों का आंकड़ा B ग्रेड में सर्वाधिक उपलब्धि द्वितीय स्थान पर सी ग्रेड दर्शा रहा है। प्रथम चार अधिगम क्षेत्रों में डी ग्रेड के प्राप्तांकों से यहां के प्राप्तांकों में भी काफी उछाल दिखाई दिया है। प्रथम चार अधिगम क्षेत्रों से A ग्रेड के प्राप्तांक काफी पिछड़ गए हैं। चारों क्षेत्रों में 38ः के आस–पास रहने वाला आंकड़ा 11-89% पर आकर पिछड़ापन दर्शा रहा है।

परिवेशीय सजगता के प्राप्तांकों में A ग्रेड में जहां 27% पिछडे हैं वहीं D ग्रेड के प्राप्तांकों में 17% का उछाल आया है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा के दृष्टिकोण से विद्यार्थी परिवेशीय सजगता में पिछड़ापन दर्शा रहे हैं।

अर्थात् हमारे विद्यार्थियों में पुस्तकीय ज्ञान के प्रति जो जागरूकता है वह परिवेश के प्रति दिखाई नहीं दे रही है।

''ज्ञान की सार्थकता परिवेश के प्रति जागरूकता प्रदान करने में निहित है।''

प्रारम्भिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन हिन्दी 2018 के प्राप्त आंकड़ों में इस जागरूकता के प्रति न्यूनता दृष्टिगोचर हुई यह चिंतनीय विषय है।

हिन्दी पर समग्र दृष्टिपात

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह परिणाम दृष्टिगोचर हो रहा है कि विद्यार्थियों में हिन्दी विषय अधिगम में सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं। A+ ग्रेड 16.59%, A ग्रेड 32.98, B ग्रेड 26-77 C ग्रेड 16-29 व डी ग्रेड मात्र 7.35 विद्यार्थियों ने प्राप्त की। इस परिणाम को उत्तम की श्रेणी में रखा जा सकता है। यह अजमेर जिले के लिए गौरवशाली है। विद्यार्थियों में प्राप्तांकों का यह स्तर उनके उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत करता है। क्योंकि यहां भाषा ही वह माध्यम है जो विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति के अधिकतम अवसर प्रदान करती है।

भाषा के समग्र परिणाम को एक साथ समझने के पश्चात् यदि अधिगम क्षेत्रों के आधार पर विहंगम दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि ये परिणाम कुछ उलझन सी पैदा कर रहे हैं। कारण कि विद्यालयीन अध्ययन से विद्यार्थियों में भाषा की शुद्धता, गहनता व व्याकरण की समझ पैदा होती है, जो कि विद्यालय आने से पूर्व उनकी परिवेशीय जानकारी व उनकी सृजनशीलता में अभिवृद्धि करती है।

प्राप्त परिणाम द्वारा यह जानकारी प्राप्त हुई कि बालकों में हिन्दी गद्य, पद्य को समझना लिखना की समझ उत्तम किस्म की है।व्यावहारिक व्याकरण के प्राप्तांक सर्वोत्तम हैं। जबकि भाषा को अधिगम करने में व्याकरण की भूमिका बेहद सूक्ष्म व गहन गंभीर होती है। जब इस क्षेत्र के प्राप्तांक उच्च श्रेणी के हैं तो उनमें अभिव्यक्ति सामर्थ्य भी उच्च होने की संभावना बनती है। तो ऐसे में नन्हें बालकों में सृजनशीलता भी स्वाभाविक रूप से बढ़ती दृष्टिगोचर होना चाहिए जो कि नहीं हुई। परिवेशीय सजगता में भी अन्य अधिगम क्षेत्रों की तुलना में अधिक पिछड़ापन दृष्टिगोचर हो रहा है जो कि वैश्वीकरण के इस युग में जहां संचार साधनों की उपलब्धता में भी वृद्धि हुई है। ऐसे में इस अधिगम क्षेत्र का पिछडना कुछ चिन्तामूलक सा लग रहा है।

''पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त में यह स्पष्ट किया है कि शालेय उम्र से ग्यारह वर्ष की उम्र तक मूर्त संक्रियात्मक अवस्था होती है।''

इसमें बालक मूर्त रूप से अथवा प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने वाले प्रत्ययों को सहजता से समझने व बोधगम्य कर पाने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। इस समय वह अप्रत्यक्ष/अमूर्त को सहजता से अधिगम नहीं कर पाता।

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों में पुस्तकीय जानकारी/ज्ञान को पढ़ कर समझना व लिखना सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त हो गया है। व्याकरण का ज्ञान भी प्राप्त है और इसके साथ ही उनकी मौलिक/सहज अभिव्यक्ति में अभिवृद्धि नहीं हो पाई है। जिस स्तर की उनसे अपेक्षा की जा सकती है।

आंकड़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि बालक बौद्धिक दृष्टिकोण से आगे बढ़ रहे हैं। मगर सृजनशीलता, सृजनात्मकता में पिछड़ रहे हैं। परिवेशीय सजगता में भी विद्यार्थियों का पिछड़ना दृष्टिगोचर हो रहा है।

उक्त आधार पर हम यह समझ सकते हैं कि हमें अपनी कक्षा कक्षीय प्रक्रियाओं में बालकों हेतु सुजनात्मकता व परिवेशीय सजगता के अवसर और अधिक उपलब्ध करवाने होंगे। क्योंकि ज्ञान के प्रसार व सदुपयोग हेतु ये विशिष्ट पहलू हैं। ज्ञान की सार्थकता ही उसके सदुपयोग में निहित है। विद्यालय में बालकों को सृजनात्मकता के और अधिक अवसर देने होंगे। ताकि उनकी मौलिक सृजनशीलता में निखार आ सके और वे अपने प्राप्त ज्ञान का सदुपयोग दैनिक जीवन में कर पाने का सामर्थ्य हासिल कर सकें।

कक्षा में पाठ्यक्रम को भी इस तरह से प्रस्तुत किया जाए कि बालक स्वतः ही अपने परिवेश के प्रति सजग हों। परिवेश सम्बन्धित प्रश्नोत्तरों हेतु प्रेरित किया जाए। परिवेश सम्बन्धी पूर्व ज्ञान के आधार पर आगे बढ़ने सम्बन्धी जिज्ञासाओं को भी अध्ययन–अध्यापन के दौरान ध्यान दिया जाना अति आवश्यक होना चाहिए अन्यथा विद्यार्थियों के प्राप्त ज्ञान का कोई मोल नहीं रह जाएगा।

विषय गणित **प्राप्त ग्रेड**

क्र.सं.	अधिगम क्षेत्र	**A+**	**A**	B	**C**	D
1	आकृति एवं स्थान की समझ	45.09	23.52	14.30	12.56	4.53
2	संख्या ज्ञान की समझ	69.26	14.82	10.98	3.76	1.19
3	संक्रियाओं की समझ	17.11	31.79	20.54	22.99	7.58
4	मापन की समझ	28.68	35.97	19.03	12.51	3.80
5	आंकड़ों का प्रबन्धन पैटर्न की समझ	61.05	15.34	14.13	7.02	2.46
योग		**221.19**	**121.44**	**78.98**	**58.84**	**19.56**
औसत		**44.23**	**24.28**	**15.79**	**11.76**	**11.76**

आकृति एवं स्थान की समझ

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि सर्वाधिक A+ ग्रेड व द्वितीय स्थान पर A ग्रेड प्राप्त हुई जिससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों में आकृति व स्थान। आकार की समझ पाने की क्षमता पूर्णतः विकसित हो गई है। परिणाम आत्म संतुष्टि प्रदान करने वाला प्राप्त हुआ है।

संख्या ज्ञान की समझ

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े ग्रेड A+ में सर्वाधिक व ग्रेड A में द्वितीय स्थान पर रहे हैं जो यह स्पष्ट करते हैं विद्यार्थियों में संख्याओं/अंकों के प्रति सूक्ष्म समझ विकसित हो गई है जो कि गणित का मूलाधार है।

संक्रियाओं की समझ

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े सर्वाधिक A ग्रेड में व B ग्रेड के प्राप्तांक द्वितीय स्थान पर रहे हैं। संक्रियाओं के दृष्टिकोण से देखा जाए तो परिणाम अच्छा ही कहा जाएगा मगर यदि प्रारम्भ के दोनों क्षेत्रों से तुलना की जाए तो यह दृष्टिगोचर होता है कि आकार/आकृति, अंक/संख्या की पूर्ण समझ होने के बावजूद भी उनका व्यावहारिक प्रयोग में विद्यार्थीपिछड़ापन प्रदर्शित कर रहे हैं। अर्थात् अंकों के जोड़/घटाव, गुणा/भाग जैसी क्रियाओं में विद्यार्थियों को अभी थोड़ी और मेहनत की आवश्यकता है। निरंतर अभ्यास द्वारा यह क्षेत्र भी विद्यार्थियों को अग्रिम पंक्ति में बनाए रख पाएगा।

मापन की समझ

इस क्षेत्र के प्राप्तांक सर्वाधिक ग्रेड A में व द्वितीय स्थान पर A+ के रहे हैं। जो कि विद्यार्थियों में मापन की उचित समझ होने का संकेत दे रहे हैं। अर्थात् ये परिणाम भी पूर्णतः आत्मसंतुष्टि प्रदान करने वाले रहे।

आंकड़ों का प्रबन्धन एवं पैटर्न की समझ

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़ें उच्च किस्म की उपलब्धि ही दर्शा रहे हैं। Ạ ग्रेड सर्वाधिक एवं द्वितीय स्थान पर A ग्रेड के प्राप्तांक रहे हैं। जो गणितीय दृष्टिकोण से बेहतर परिणामों में गिने जा सकते हैं। इस आधार पर यह माना जा सकता है कि विद्यार्थियों को अंकों को सूत्र में पिरोकर हल प्राप्त करने की क्षमता विकसित हो गई है। संक्रियाओं के अभ्यास की न्यूनता की ओर इंगित करती है। अभ्यास से यहां भी सुधार आ जाएगा क्योंकि अन्य क्षेत्रों के आंकड़े यही दर्शा रहे हैं।

विषय अंग्रेजी **प्राप्त ग्रेड**

क्र.सं.	अधिगम क्षेत्र	A+	A	B	C	D
1	**शाब्दिक विषय वस्तु**	60.23	25.29	8.26	4.50	1.72
2	**संरचनात्मक शब्द विन्यास**	36.03	28.52	22.70	8.78	3.97
3	**पठन बोध**	28.88	30.88	18.90	15.45	5.90
4	**लेखन शैली**	6.22	19.16	23.38	35.18	16.06
	योग	**131.36**	**103.83**	**73.27**	**63.91**	**27.65**
	औसत	**32.84**	**25.95**	**18.31**	**15.97**	**6.91**

शाब्दिक विषय वस्तु

अंग्रेजी भाषा के इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े यह स्पष्ट कर रहे हैं कि सर्वाधिक प्राप्तांक A+ ग्रेड, द्वितीय स्थान पर A ग्रेड रही है। यह हमारे लिए बहुत प्रसन्नता की बात है। आधारभूत शब्दावली का उन्नत होना प्रकट हो रहा है जो कि यह सुनिश्चित करता है कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी के शब्दों पर पकड़ अच्छे से प्राप्त हो गई है।

किसी भी भाषा का मूलाधार उसका शाब्दिक विषय वस्तु ही हुआ करता है। मूलाधार सुदृढ़ है तो कंगूरे की खूबसूरती अवश्य ही निखार प्राप्त करेगी ऐसा विश्वास इन आंकड़ों द्वारा प्राप्त हुआ।

संरचनात्मक शब्द विन्यास

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े भी सर्वाधिक प्राप्तांक Ạ ग्रेड, द्वितीय स्थान पर A ग्रेड को ही इंगित कर रहे है। हालांकि शाब्दिक विषय वस्तु क्षेत्र से Ạग्रेड की तुलना की जाए तो यहां प्राप्तांकों के प्रतिशत में काफी अन्तर है। शाब्दिक विषय वस्तु में 62.25% ही प्राप्तांक है। अर्थात् विद्यार्थियों को Ạ ग्रेड प्राप्त होने पर भी संरचनात्मक शब्द विन्यास में थोड़ी और मेहनत की दरकार है। वैसे सामान्य तौर पर यह परिणाम उत्तम की श्रेणी में ही आएगा।

पठन बोध

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े भी सर्वाधिक प्राप्तांक A ग्रेड, को व द्वितीय स्थान पर A+ ग्रेड को दर्शा रहे हैं। अर्थात् विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा के कथन को पढ़कर उत्तर देने की क्षमता विकसित हो गई है। गद्यांश/पद्यांश को अंग्रेजी में पढ़कर समझना तत्पश्चात्, अपेक्षित प्रश्नों के उत्तर देने में छात्र उत्तम प्रदर्शन कर रहे हैं जो कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में अति उत्तम स्वीकारा जा सकता है।

लेखन शैली

इस क्षेत्र के प्राप्तांक प्रारम्भिक तीनों क्षेत्रों से पिछड़े हैं। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सर्वाधिक प्राप्तांक C ग्रेड, में व द्वितीय स्थान पर B ग्रेड को प्राप्त हुआ है। A+ ग्रेड में जहां काफी गिरावट देखी जा रही है वहीं ग्रेड क में उछाल आया है। जो कि कुल मिलाकर अच्छा संकेत नहीं दे रहा है।

हमें यह समझना भी बड़ा मुश्किल लग रहा है कि अब विद्यार्थियों में शाब्दिक समझ, संरचनात्मक शब्द विन्यास, पठन बोध जैसे समस्त क्षेत्रों में उच्चांक प्राप्त हो गए हैं। तो उनमें लेखन शैली का प्रदर्शन न्यून स्तर का कैसे रहा?

यह भी हो सकता है कि बालकों में पुस्तकीय ज्ञान बोध तो हो गया है। मगर अभ्यास के अभाव में व्यवहारिक लेखन शैली उचित प्रारूप में विकसित नहीं हो पाई।

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर इस क्षेत्र में अभ्यास की आवश्यकता का प्रदर्शन होता दिख रहा है। शाब्दिक विषयवस्तु संरचनात्मक शब्द विन्यास में Ạग्रेड हुए भी लेकिन शैली में C ग्रेड की अधिकता कुछ भ्रमित भी करती है।

समग्र दृष्टिपात अंग्रेजी पर

अंग्रेजी विषय के औसत प्राप्तांकों पर एक साथ दृष्टिपात करने पर प्राप्त होता है कि सर्वाधिक प्राप्तांक A+ ग्रेड के हैं हिन्दुस्तान का राजस्थान क्षेत्र, जो हिन्दी भाषी क्षेत्र के रूप में पहचान रखता है। वहां हिन्दी में A ग्रेड और अंग्रेजी में एक कदम आगे Ạ ग्रेड प्राप्त होना वास्तव में अंग्रेजी में अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करता है। न्यूनतम प्राप्तांक D ग्रेड के हैं। जो कि यह सिद्ध करता है कि सरकारी बालकों को अंग्रेजी में महारत हासिल हो गई है। (सामाजिक स्थितियां चाहे तो कुछ भी हों) लेखन शैली में अवश्य ही विद्यार्थियों में थोड़ा पिछड़ना दिखाई दिया है। पर हां लेखन शैली में महारत हेतु अनिवार्य अधिगम क्षेत्रों में महारत प्राप्त होना विश्वास दिलाता है कि लेखन शैली में भी उच्चांक प्राप्ति की गुंजाइश बनती है।

विषय पर्यावरण **प्राप्त ग्रेड**

क्र.सं.	अधिगम क्षेत्र	A+	A	B	C	D
1	अवलोकन व दर्ज करना	65.96	19.85	8.62	4.05	1.52
2	सम्प्रेषण अभिव्यक्ति/चर्चा	27.01	20.73	15.82	26.53	9.91
3	वर्गीकरण	9.01	34.66	36.84	17.47	2.03
4	व्याख्या विश्लेषण	16.10	33.34	27.77	18.54	4.25
5	प्रश्न करना	29.04	34.06	18.82	8.66	9.42
6	प्रयोग करना	14.12	28.79	25.95	20.25	10.89
7	न्याय, समता के प्रति सरोकार	19.75	23.64	30.21	19.59	6.82
8	एक दूसरे के कार्यों का सम्मान वगुणों की प्रशंसा	3.95	13.37	27.13	34.42	21.13
योग		**184.94**	**174.38**	**191.96**	**149.51**	**65.97**
औसत		**23.11**	**21.79**	**23.89**	**18.68**	**8.24**

अवलोकन व दर्ज करना

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े सर्वाधिक प्राप्तांक A+ ग्रेड व द्वितीय स्थान पर A ग्रेड को दर्शा रहे हैं। जो कि बेहद शानदार स्थिति है। विद्यालयी ज्ञान अपने पर्यावरण का अवलोकन कर उसे दर्ज करना या अभिव्यक्त कर पाने की क्षमता दे रहा है। यह हमारे विद्यालयों की बहुत बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। B, C, D ग्रेड में क्रमशः न्यूनतम प्राप्तांक है जो इस बात का संकेत है कि विद्यर्थियों में अपने पर्यावरण का अवलोकन कर उसे दर्ज कर पाने की क्षमता प्राप्त हो गई है। इसे ज्ञान का सार्थक सदुपयोग कहा जा सकता है।

सम्प्रेषण व अभिव्यक्ति/चर्चा

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े सर्वाधिक प्राप्तांक A+ ग्रेड व द्वितीय स्थान पर C ग्रेड के रहे हैं। जो कि ठीक ठाक माना जा सकता है। विद्यार्थियों में प्राप्त ज्ञान को अभिव्यक्त करने की क्षमता उनकी व्यक्तिगत विभिन्नताओं से भी प्रभावित होती है। यहां प्राप्त आंकड़े समरूप ही A+,A, B, C, D में विभक्त हुए है। सामान्य अंतर मौजूद हैं सभी में अतः इस पर कोई विशेष टिप्पणी दर्ज करने की विशेष गुंजाइश नज़र नहीं आती है।

वर्गीकरण

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े सर्वाधिक B ग्रेड व द्वितीय स्थान पर A ग्रेड का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। जो कि चिंतामूलक है। क्योंकि अन्य विषयों व क्षेत्रों में अधिकतम स्थान A व द्वितीय A ग्रेड को प्राप्त हुआ है। अतः उन विद्यार्थियों से वर्गीकरण की समझ पैदा हो जाने की अपेक्षा की जा सकती है। यहां यह भी कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में अभी और मेहनत की आवश्यकता है ताकि छात्र वर्गीकरण के मूलाभाव को समझ अपने ज्ञान के व्यवहार क्षेत्र में प्रयुक्त कर सके।

व्याख्या/विश्लेषण करना

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े सर्वाधिक A ग्रेड व द्वितीय स्थान पर B ग्रेड के रहे हैं। यह भी अच्छी उपलब्धि मानी जा सकती है कि विद्यार्थियों में प्राप्त ज्ञान की व्याख्या करना उसका विश्लेषण कर सूक्ष्मसमझ बना पाने की क्षमता आ गई है। अन्य ग्रेड में भी आंकड़े समरूप ही वितरित हुए हैं।

प्रश्न करना

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े सर्वाधिक A ग्रेड द्वितीय स्थान पर A+ ग्रेड प्राप्त हुई। यह एक शानदार उपलब्धि ही है कि विद्यार्थी अपनी समझ के आधार पर प्रश्न करने की क्षमता रखते हैं। ज्ञानार्जन का उद्देश्य एक यह भी है कि छात्र सम्बन्धित शंका/समाधान हेतु प्रश्न करने की क्षमता रखता हो, जिससे कि उसकी जिज्ञासाओं शंकाओं का समय पर समाधान हो सके।

प्रयोग करना

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े सर्वाधिक A ग्रेड द्वितीय स्थान पर B ग्रेड दर्शा रहे हैं। शेष ग्रेड सम रही है। लगभग लगभग डी ग्रेड में भी प्राप्तांक प्रतिशत कुछ बढ़ा है। यह तस्वीर कुछ भ्रमित व परेशान करने वाली हैं। कारण कि बाल्यावस्था में बालक प्राकृतिक रूप से ही प्रयोग धर्मी होते हैं। अतः अन्य क्षेत्रों के प्राप्तांकों से यहाँ बढ़त की अपेक्षा रहती है जो कि प्राप्त नहीं हुई है। अर्थात् विद्यालयों में शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थियों की सहज स्फुत प्रयोगधर्मिता, जिज्ञासु प्रवृत्ति को कायम रख पाने का सामर्थ्य नहीं रख पा रही है। तभी बालक अन्य क्षेत्रों से तुलनात्मक रूप में इस प्रयोग वाले क्षेत्र में पिछड़ेपन को जाहिर कर रहे हैं। अन्य क्षेत्रों में A+ ग्रेड के प्राप्तांक आगे हैं व डी ग्रेड न्यून ही है। मगर अन्य क्षेत्रों से थोड़ी यहां बढ़त हासिल हुई है।

न्याय व समता के प्रति सरोकार

इस क्षेत्र में सर्वाधिक प्राप्तांक B ग्रेड में व द्वितीय स्थान पर A ग्रेड रही है। यों तो ये आंकड़े ठीक–ठीक हैं। मगर बाल मनोविज्ञान केदृष्टिकोण से देखने पर यह आंकड़ा ठीक नहीं लग पाता है। कारण कि अधिकतर विषयों व अधिकांश क्षेत्रों में A+ ग्रेड प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का इस क्षेत्र में पिछड़ना प्रश्नवाचक चिन्ह खड़ा कर रहा है। कारण यह कि बाल्यावस्था की यह विशेषता है कि इस अवस्था में

बालक समतावादी दृष्टिकोण ही रखते हैं। निःस्वार्थ भावना रहने से उनमें न्याय के प्रति भी सकारात्मकता ही प्रकट होती है। छोटा–बड़ा, न्याय–अन्याय, स्त्री–पुरूष, गरीब–अमीर अलग आदि के तरफ उनका ध्यान नहीं जाता है। नन्हें बालकों के लिए कोई पृथक्ता माइने ही नहीं रखती है। वे सभी के प्रति समतावादी दृष्टिकोण रखते हैं। तो इस क्षेत्र के आंकड़े पृथक् तस्वीर कैसे पेश कर रहे हैं। (अर्थात् समता व न्याय के प्रति अग्रज माने जाने वाले बालक इस क्षेत्र में अग्रिम पायदान पर क्यों नहीं रह पाए यह प्रश्न हमारे भीतर पैदा होता है। जो कि समाधान की अपेक्षा भी रखता है। खैर कारणों पर बाद में शोध अध्ययन करेंगे।)

एक दूसरे के कार्यों का सम्मान व गुणों की प्रशंसा

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़े सी ग्रेड में सर्वाधिक व द्वितीय स्थान पर बी ग्रेड के प्राप्त हुए हैं। पर्यावरण विषय के समस्त अधिगम क्षेत्रों में यही क्षेत्र ऐसा है जहां सी ग्रेड के प्राप्तांक सर्वाधिक है। यह शिक्षण शास्त्रियों के लिए चिंतामूलक है। कारण कि ''शिक्षा'' समाज में ज्ञान प्रसार हेतु जिम्मेदार कारक है। ज्ञान, सामाजिक सरोकारों व सम्मान जनक व्यवहार का आधार स्तम्भ है। इस क्षेत्र में पिछड़ना हमारे शिक्षा जगत के लिये शर्मनाक पहलू है। प्राप्त आंकड़ों से यह भी विशिष्टता प्राप्त हुई है कि जहां प्रत्येक क्षेत्र में D ग्रेड के प्राप्तांक अंतिम पायदान पर हैं वहीं इस क्षेत्र के अंतिम पायदान पर A+ ग्रेड के प्राप्तांकों का होना। अपने आप में बेहद अफसोस जनक है।

अन्य विषयों व अन्य क्षेत्रों के सभी के प्राप्तांकों से तुलना की जाए तो एकमात्र यह क्षेत्र ही ऐसा है जहां A में न्यूनतम प्राप्तांक प्राप्त हुए हैं। यह ज्ञान की उपादेयता पर भी करारी चोट प्रदान कर रहा है। विद्यार्थी जहां अन्य क्षेत्रों में A+ से आगे हैं तो उनमें योग्यता है यह सिद्ध हो रही है। अधिगम क्षेत्र यह जिसमें बालकों को दूसरों के कार्यों का सम्मान व गुणों की प्रशंसा करना सीखना है। आत्मसात नहीं कर पाए हैं जो कि उनके ज्ञानार्जन की सार्थकता पर प्रश्नवाचक चिन्ह लगा रहा है। यह सामाजिक शैक्षणिक दृष्टिकोण से उचित नहीं है। शिक्षकों, शिक्षाविदों को इस क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया जाने की आवश्यकता है। तभी ज्ञान प्राप्ति की सार्थकता इस समाज में व्याप्त हो पाएगी। यह हमें प्राप्त आंकड़ों से भली भांति स्पष्ट होता है।

दृष्टिपात समग्र पर्यावरण पर

इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों में अपनेपर्यावरण के प्रति सामान्य सजगता है। A+ व B ग्रेड के प्राप्तांक सम स्तर पर प्राप्त हुए हैं। न्यूनतम डी ग्रेड ही रहा है। अवलोकन व दर्ज करना अधिगम क्षेत्र में विद्यार्थियों ने सर्वोत्तम उपलब्धि प्राप्त की है। सम्प्रेषण अभिव्यक्ति में भी बढ़त हासिल की है। वर्गीकरण, व्याख्या, विश्लेषण प्रश्न करना, प्रयोग करना जैसे समस्त अधिगम क्षेत्रों में प्राप्त आंकड़े आत्म संतुष्टि प्रदान करने वाले हैं। वर्गीकरण व न्याय समता के प्रति सरोकार क्षेत्र में लगभग समान उपलब्धि रही है। एक दूसरे के कार्यों का सम्मान व गुणों की प्रशंसा करना सीखने वाला अधिगम क्षेत्र काफी अलग तस्वीर पेश कर रहा है। अन्य क्षेत्रों में जहां न्यूनतम प्राप्तांक डी ग्रेड के रहे हैं। वो यहां A+ ग्रेड के हैं। डी ग्रेड के प्राप्तांकों में काफी उछाल आया है।

यह क्षेत्र शिक्षित सामाजिक सरोकारों का आइना मात्र है। सामाजिक जीवन यापन के लिए शिक्षित होना या ज्ञानवान होना ही मात्र पर्याप्त नहीं यहाँ विद्यार्थियों के व्यवहार में भी सम्मानजनक व्यवहार का आना बेहद जरूरी हैं अन्यथा शिक्षा व्यर्थ हे। इस तरह यहां हमने पाया कि A ग्रेड के प्राप्तांक अधिकांश क्षेत्रों में प्राप्त होने के बावजूद भी यह व्यवहारिक क्षेत्र A+ ग्रेड में सर्वाधिक पिछड़ा होना दर्शा रहा है जो

कि चिंतनीय पहलु है। इस पर शिक्षण प्रक्रियाओं व पाठ्यक्रम दोनों पर ही पुनर्विचार अनिवार्य सा महसूस हो रहा है।

आज दिनांक 06.12.2018 को दैनिक भास्कर समाचार पत्र के पृष्ठ 10 पर प्रवीण चन्द छाबड़ा वरिष्ठ पत्रकार का लेख छपा है। टकराहट क्यों जिसे सार रूप में महत्वपूर्ण मुख्य पंक्ति के रूप में एक वाक्य दिया है।

''70 साल पहले साक्षरता सिर्फ 8% पर सम्मान 100% वर्तमान की यह पीढ़ा मुझे शिक्षण अधिगम क्षेत्र में मूल्यांकन द्वारा प्राप्त आंकड़ों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई थी। जो कि उक्त वाक्य को सिद्ध करती है। कारण कि वर्तमान में साक्षरता दर 100% है और सम्मान का आंकड़ा प्राप्तांकों के आधार पर ऐसा ही कुछ बयां कर रहा है। यह शिक्षण गरिमा के विपरीत है। समाज में शिक्षा के प्रति सम्मानजनक स्थितियां होनी ही चाहिए। शिक्षा अधिकारियों, शिक्षण शास्त्रियों, शिक्षकों सभी को इस दिशा में विचार कर सार्थक कदम उठाने होंगे। मुझे अपने इस शोध अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों द्वारा यह स्पष्ट हो रहा है।''

सम्पूर्ण परिणाम'

अभी हमने पृथक् पृथक् प्रत्येक विषय पर दृष्टिपात किया अब हम पूर्ण परीक्षा परिणाम को देखने समझने का प्रयत्न करते हैं।

प्राप्त ग्रेड प्रतिशत में

क्र.सं.	विषय	A+	A	B	C	D
1	हिन्दी	12.55	54.18	26.38	6.62	.27
2	अंग्रेजी	20.30	52.06	22.39	4.97	.27
3	गणित	23.24	54.97	18.90	2.76	.14
4	पर्यावरण	12.05	55.21	27.12	5.42	.21
योग		**68.14**	**216.42**	**94.79**	**19.77**	**.89**
औसत		**17.03**	**54.10**	**23.69**	**4.94**	**.22**

सम्पूर्ण परिणाम एक साथ देखने पर पाया कि सर्वाधिक स्थान Aग्रेड को द्वितीय स्थान पर Bग्रेड व तृतीय स्थान पर A+ ग्रेड रही है। जो कि शानदार परिणामों में गिना जा सकता है। एक और विशिष्ट विशेषता इन परिणामों में दिखाई दी वह यह कि हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में हिन्दी की तुलना में अंग्रेजी को अधिक Ạ ग्रेड के प्राप्तांक प्राप्त हुए।

यह परिणाम हमारे सरकारी विद्यालयों के लिए बहुत बड़ा सुखद पहलु है। समाज में आज अंग्रेजी भाषा के प्रति जो सम्मानजनक नजरिया है। उस वजह से भी हमारे हिन्दी भाषी विद्यालयों में नामांकन की समस्या रहती है। 2017–18 के यह परिणाम कहीं ना कहीं हमारे विद़्यालयों को समाज में सम्मानजनक मुकाम दिलवाने में कामयाब रहेंगे। ऐसी संभावना दिखाई दे रही है। शैक्षिक स्तर में प्रगति के जो मापदण्ड हैं उनमें ये परिणाम भी मील का पत्थर साबित होंगे।

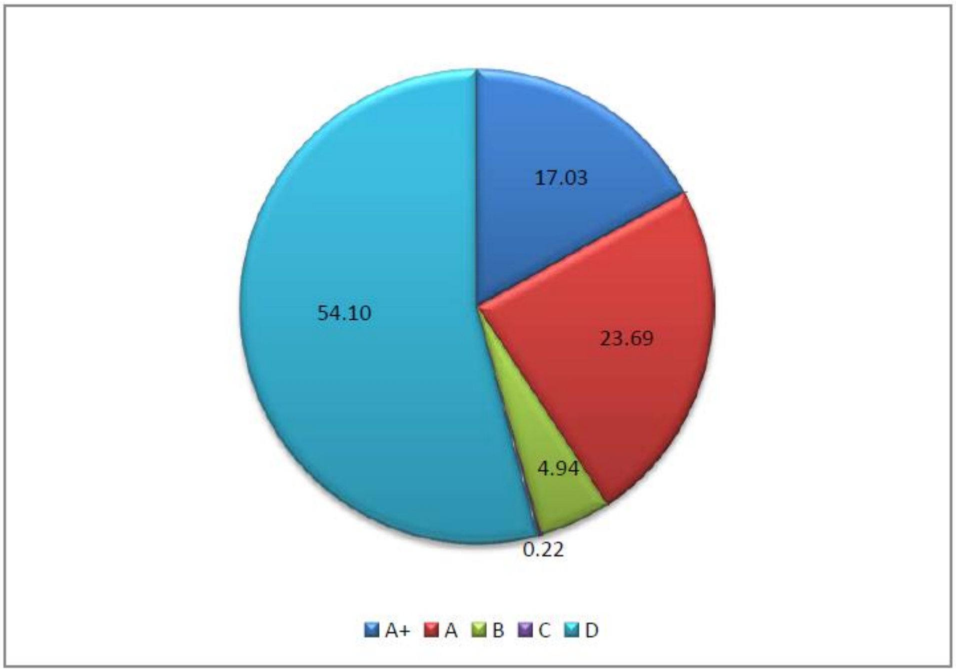

समग्र परिणाम

अंत में हमने अपनी प्राक्कलपनाओं को परखने का प्रयत्न किया तो निम्नानुसार परिणाम प्राप्त हुए।

(1) वैश्वीकरण के इस काल खण्ड के अन्तर्गत नवीन पीढ़ी के बारे में पूर्वानुमान लगाना बड़ा मुश्किल है।

जी हां बाल केन्द्रित शिक्षण में जहाँ अध्ययन अधिगम प्रक्रिया में परीक्षा/मूल्यांकन को इसलिए हटाया गया था कि बालकों में परीक्षा का डर व्याप्त होने से बालक डर के साये में भली भाँति अधिगम नहीं कर पाता। फिर कुछ विशिष्ट परिस्थितियों के मद्देनजर मूल्यांकन प्रणाली में पुनः कुछ परिवर्तन कर इस प्रक्रिया को लागू किया तो परिणामों में अकल्पनीय स्थितियां प्राप्त हुई। 54-10% A ग्रेड, 17-03% A+ ग्रेड, मात्र 4-94% C ग्रेड व -22% D ग्रेड का होना अपने आपमें पूर्वानुमानित नहीं था। हमारी प्राक्कपलना उचित ही पाई गई।

(2) शिक्षण प्रक्रिया व मूल्यांकन प्रणाली जब मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर है। अतः विद्यार्थियों के अधिगम में शत प्रतिशत सफलता की संभावना है।

प्रारम्भिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन 2017—18 के प्राप्त परिणामों के आधार पर उक्त प्राक्कल्पना भी सार्थक सिद्ध हुई।

(3) सृजनात्मक अभिव्यक्ति व परिवेशीय सजगता में उच्चांक प्राप्ति की संभावना है।

उक्त अधिगम क्षेत्र भाषा हिन्दी के परिणामों से परखा गया। सृजनात्मकत अभिव्यक्ति में A+ व A ग्रेड में अन्य क्षेत्रों से कोई उच्चांक प्राप्ति नहीं हुई जबकि अन्य क्षेत्रों से तुलना करें तो पाते हैं कि यहां डी ग्रेड के प्राप्तांकों में वृद्धि दर्ज हुई हे।

सृजनात्मकता या सृजनशीलता इस उम्र के बालकों की विशेषताओं में शामिल है। अधिगम क्षेत्र जो स्वतः स्फूर्त होता है उसमें अन्य अधिगम क्षेत्रों से पिछड़ना प्रदर्शित हुआ है जिस पर हमारे शिक्षाविदों द्वारा पुनः विचार विमर्श किया जा कर शिक्षा प्रणाली पर दृष्टिपात किया जाना अति अनिवार्य सा हो गया है। बालकों की मौलिक सृजनात्मक अभिव्यक्ति को सर्वाधिक अवसर प्राप्त होने चाहिए। इस दिशा में कार्य किया जाना अति महत्वपूर्ण है।

सृजनात्मकता या सृजनशीलता इस उम्र के बालकों की विशेषताओं में शामिल है। अधिगम क्षेत्र जो स्वतः स्फूर्त होता है उसमें अन्य अधिगम क्षेत्रों से पिछड़ना प्रदर्शित हुआ है जिस पर हमारे शिक्षाविदों द्वारा पुनः विचार विमर्श किया जा कर शिक्षा प्रणाली पर दृष्टिपात किया जाना अति अनिवार्य सा हो गया है। बालकों की मौलिक सृजनात्मक अभिव्यक्ति को सर्वाधिक अवसर प्राप्त होने चाहिए। इस दिशा में कार्य किया जाना अति महत्वपूर्ण है।

परिवेशीय सजगता के प्राप्तांकों में भी उच्चांक के बजाय पिछडना दृष्टिगोचर हुआ है। अधिगम के अन्य क्षेत्रों में विद्यार्थियों को जहांउच्चांक प्राप्त हुए हैं। इस अपेक्षित क्षेत्र में प्राप्ति से वंचित रह गए हैं। परिवेशीय सजगता में पिछड़ना ज्ञान प्राप्ति की सार्थकता पर प्रश्न वाचक चिन्ह लगा रहा है। अतः इस दिशा में शिक्षाविदों हेतु पुनर्विचार अति अनिवार्य प्रतीत हो रहा है। उक्त शोध अध्ययन द्वारा प्राप्त आंकड़ों के आधार पर इस क्षेत्र में विशेष ध्यान दिया जाना अपेक्षित है। वह चाहे पाठ्यक्रम में हो या कक्षा कक्षीय अध्ययन प्रक्रिया में।

(4) **शब्द विन्यास व लेखन शैली में उच्चांक प्राप्ति की संभावना है।**

उक्त अधिगम क्षेत्र भाषा अंग्रेजी के के प्राप्तांकों के आधार पर परखा गया है। सर्वाधिक प्राप्तांक Ạ ग्रेड के ही हैं। जो कि उच्चांक प्राप्ति की दर्शाता है। मगर यदि गूढ़ दृष्टिपात किया जाए तो शाब्दिक विषय वस्तु के प्राप्तांकों का प्रतिशत इससे अधिक आगे है।

लेखन शैली में प्राप्त आंकड़े सर्वाधिक सी ग्रेड के व द्वितीय स्थान पर बी ग्रेड के प्राप्त हुए हैं। A+ ग्रेड में गिरावट व डी ग्रेड में उछाल भी दिखाई दिया है। अर्थात् समग्र रूप में A+ ग्रेड प्राप्त करने वाले विद्यार्थी लेखन शैली में पिछड़ापन प्रदर्शित कर रहे हैं इससे यह दृष्टिगोचर हो रहा है कि बालकों में पुस्तकीय ज्ञान होने के बावजूद भी अभिव्यक्ति हेतु माध्यम (लेखन शैली) ना होने से सहज अभिव्यक्ति की समस्या ज्यों की त्यों है। शिक्षकों, शिक्षाविदों का इस दिशा में भी विशेष प्रयास किया जाना अपेक्षित है। क्योंकि शब्द विन्यास व लेखन शैली शिक्षा की अनिवार्यता है।

सीखने के/अधिगम के विशिष्ट क्षेत्रों पर पृथक्–पृथक् मूल्यांकन किया गया था। अतः हमें इस क्षेत्र उच्चांक प्राप्ति की संभावना थीं प्रस्तुत अध्ययन में यह प्राप्त न हो सका।(5) आकृति व स्थान की समझ, संख्या ज्ञान की समझ में उच्चांक प्राप्त होंगे।

उक्त अधिगम क्षेत्र गणित विषय के प्राप्तांकों के आधार पर परखा गया।

2017–18 के मूल्यांकन में विद्यार्थियों को इस अधिगम क्षेत्र में उच्चांकों की प्राप्ति हुई है। विशिष्ट अधिगम क्षेत्रों के अध्यापन, मूल्यांकन द्वारा इस प्राक्कलपना को सार्थकता/सकारात्मकता प्राप्त हुई अर्थात् गणित विषय का अध्ययन/अध्यापन सही दिशा में चल रहा है। इस शोध अध्ययन से यह प्राप्त हुआ।

(6) सकारात्मक एवं मनोवैज्ञानिक शिक्षण प्रक्रियाओं से बालकों में न्याय व समता के प्रति सरोकार तथा एक दूसरे के कार्यों का सम्मान व गुणों की प्रशंसा करने में उन्हें उच्चांक प्राप्त होंगे।

उक्त अधिगम क्षेत्र पर्यावरण विषय के प्राप्तांकों के आधार पर परखा गया है। इस क्षेत्र में प्राप्त अंकों द्वारा शिक्षा की सार्थकता को समझने का प्रयत्न किया गया है।

न्याय व समता के प्रति सरोकार क्षेत्र में बालकों को सर्वाधिक प्राप्तांक बी ग्रेड के प्राप्त हुए हैं। ए ग्रेड द्वितीय स्थान पर है। अधिगम के अन्य क्षेत्रों से तुलनात्मक रूप में यहां पिछड़ना ही प्रदर्शित हुआ है। इस मूल्यांकन में औसत 10–11 वर्ष के बालक शामिल हुए हैं मानव जीवन की यह उम्र बाल्यावस्था कहलाती है। बाल्यावस्था में सामान्यतः समतावादी दृष्टिकोण रहता ही हैं बालकों का फिर विद्यालयों में अध्ययन करने वाले बालक इस क्षेत्र में उच्च अंक प्राप्त क्यों नहीं कर पाए? यह चिन्तनीय प्रश्न प्राप्त हुआ प्रस्तुत अध्ययन से।

दूसरा क्षेत्र था एक दूसरे के कार्यों का सम्मान व गुणों की प्रशंसा। इस क्षेत्र में प्राप्त आंकड़ों द्वारा सर्वाधिक पिछड़ापन प्रदर्शित हुआ है। शिक्षा का उद्देश्य शिक्षित व्यवहार होता है। अतः हमें इस क्षेत्र में उच्च अंकों के प्राप्ति की संभावना थी जो कि विफल रही। पुस्तकीय ज्ञान दैनिक व्यवहार में उपयोग ना हो तो ज्ञान की सार्थकता ही संदेह के घेरे में आ जाती है। यह अधिगम क्षेत्र प्राप्तांकों में पिछडना शिक्षकों व शिक्षाविदों समाज शास्त्रियों सभी के लिए चिंतनीय है। इस क्षेत्र में जहां सहजता से अंक प्राप्ति की संभावना थी वह नहीं हो पाई। हमें यहां विशेष प्रयत्न करने होंगे। फिर चाहे वे पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्चा, या अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया है। पुनर्विचार बेहद जरूरी है।

शोध सार

प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन 2017–18 के मूल्यांकन परिणामों पर दृष्टिपात करने पर प्राप्त हुआ है कि परिणाम संतुष्टि प्रदान करने वाले हैं। समाज में विद्यालयों की साख बढ़ाने वाले हैं। 54-10% ए ग्रेड, 23-69% बी ग्रेड, 17-03% ए प्लस ग्रेड, 04-94% सी ग्रेड व मात्र -22% डी ग्रेड प्राप्त हुई है। जो कि शिक्षा का स्तर प्रगति पथ पर होना दर्शा रहा है। हमें शिक्षा विभाग को फक्र होना स्वाभाविक है। मानवीय व भौतिक संसाधनों के अभाव के बावजूद भी मूल्यांकन परिणामों द्वारा उच्च श्रेणी ही प्राप्त हुई है।

तस्वीर का दूसरा पहलू जो कि हमें इन परिणामों पर विहंगम दृष्टिपात करने पर प्राप्त हुआ है। वह यह है कि शिक्षा का ज्ञान का प्रमुख उद्देश्य विषयगत प्रवीणता मात्र ही नहीं होता वरन् सुशिक्षित सम्मान जनकव्यवहार में भी प्रदर्शित हो पाना चाहिए। हमारे छात्रों की अन्य अधिकतम अधिगम क्षेत्रों में जहां A व A+ ग्रेड के द्वारा प्रवीणता प्रदर्शित हो रही है वहीं समता/न्याय व दूसरों के गुणों का सम्मान जैसे अति आवश्यक अधिगम क्षेत्रों में न्यूनता का प्रदर्शन हुआ। जो कि हमारी शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रश्न वाचक चिन्ह लगा रहा है। इस दिशा में शिक्षा विभाग का विशेष ध्यान दिया जाना अत्यावश्यक है। यह हमें अपने प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा प्राप्त आंकडों से स्पष्ट हो रहा है।

दूसरी विशेष बात इस अध्ययन द्वारा यह भी प्राप्त हुई कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा से भी अधिक अंग्रेजी भाषा के प्राप्तांक प्राप्त हुए हैं। अर्थात् हमें खुशी है कि हमारे विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा में प्रवीणता प्राप्त कर रहे हैं। मगर हिन्दी भाषा में पिछड़ना (आंकड़ों के तुलनात्मक अध्ययन) भी हमें विचलित करने वाला है। अतः विभाग द्वारा हिन्दी भाषा शिक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया जाना अति अनिवार्य सा लग रहा है।

सृजनात्मकता व परिवेशीय सजगता में भी तुलनात्मक रूप से न्यूनता का प्रदर्शन हुआ जिससे यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों में मौलिकता व सहजता जो कि स्वाभाविक रूप में होती है में भी बालक पिछड़ रहे हैं तो शिक्षा मात्र पुस्तकीय अध्ययन होकर रह जा रही है। प्रदर्शित हो रहा है। यह चिंतनीय पहलु है। जिस पर पुनर्विचार किया जाना जरूरी है।

सुझाव

आगामी शोध अध्ययन में इस शोध से प्राप्ति के कारणों को खोजने पर अध्ययन किया जाए व निराकरण के बिन्दुओं पर दृष्टिपात हो।